بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 03.10.25

हुनैन नामक युद्ध के परिवेश में
नबी करीम ﷺ के पवित्र जीवन परिचय का बयान।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (अख़ा, तिथि 3,1404 हश)03.10.. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हुनैन नामक युद्ध के बाद उससे प्राप्त माले ग़नीमत तथा उसके आवंटन का वर्णन हो रहा था, उसके विषय में और अधिक घटनाएँ इस प्रकार हैं।

रसूलुल्लाह ﷺ ने समस्त धन सम्पत्ति जअराना नामक स्थान पर एकत्र करने का आदेश दिया और आप स. ताएॅफ़ की ओर जाकर लगभग एक महीने बाद जअराना पधारे और यहाँ पहुँच कर भी आप स. ने माले ग़नीमत नहीं बांटा बल्कि कुछ दिन और प्रतीक्षा की, सम्भवतः बनू हवाज़न पश्चाताप करके वापस आ जाएं। इधर नबी करीम ﷺ उनकी प्रतीक्षा करते रहे और उधर बनू हवाज़न इस दुविधा में रहे कि उनका रसूलुल्लाह ﷺ के पास जाना लाभप्रद भी होगा कि नहीं। जब आप स. ने लगभग 13,14 दिन प्रतीक्षा करके माले ग़नीमत लोगों में बाँट दिया तो बनू हवाज़न के चौदह प्रतिष्ठित लोग, जो इस्लाम क़ुबूल कर चुके थे, आप स. की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि हमारे पूरे क़बीले ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है तथा उन लोगों ने आप स. से दया की प्रार्थना की, तो आप स. ने फ़रमाया कि मैंने तो बड़े दिनों तक तुम्हारी प्रतीक्षा की, परन्तु फिर माले ग़नीमत लोगों को दे दिया। अब तुम देख रहे हो कि कैदियों में से बहुत कम मौजूद रह गए हैं तथा अन्य सब बांटे जा चुके हैं, अतः अब तुम धन

सम्पत्ति अथवा बंदी पुरुष या महिलाओं में से किसी एक को चुन सकते हो। बनू हवाज़न ने बंदी पुरुषों एवं महिलाओं को वापस लेने का निर्णय किया। इस पर आँहज़रत ﷺ ने बनू अब्दुल मुत्तलिब के पास मौजूद बन्दी तो तुरन्त वापस कर दिए, जबकि शेष बंदियों के सम्बन्ध में उन्हें सुझाव दिया कि वे मुसलमानों के सामने अपने इस्लाम को प्रकट करके रसूलुल्लाह ﷺ को अपने लिए सिफ़ारिश करने वाला नियुक्त कर दें। अतएव ऐसा ही किया गया, और यूं आँहुज़ूर ﷺ की अदित्तीय दानशीलता के कारण बनू हवाज़न के सभी क़ैदी सरलता पूर्वक आज़ाद हो गए।

आँहज़रत ﷺ ने बनू हवाज़न के उन क़ैदियों को न केवल बिना कुछ लिए आज़ाद फ़रमा दिया बल्कि उन्हें कपड़े भी दिए और आप स. ने आग्रह किया कि उनमें से कोई भी आज़ाद होने वाला नए लिबास के बिना न जाए। अतएव इस निर्देश के पालन में हर बन्दी को नया लिबास भी दिया गया। रिवायत के अनुसार तीन लोग ऐसे थे कि जिन्होंने अपने क़ैदी वापस देने से इन्कार कर दिया। कुछ अन्य कथनों के अनुसार रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि बनू हवाज़न के समस्त बन्दी स्वतंत्र हैं और जो अपना बंदी आज़ाद करना नहीं चाहता, उसको इसके बदले बैतूल माल से छः जवान ऊँट उस क़ैदी के बदले में दिए जाएंगे। अतः इस पर वे सब लोग भी तय्यार हो गए जो अपने क़ैदी नहीं देना चाहते थे, और यूं बनू हवाज़न के छः हज़ार बंदी स्वतंत्र कर दिए गए।

कुछ रिवायतों के अनुसार एनिया बिन हिसन फ़ज़ारी ने आज्ञा की अवहेलना की और उसको बड़ा पछतावा हुआ और वह भलाई एवं बरकत से भी वंचित रहा। अतः लिखा है कि जब आँहज़रत ﷺ को बताया गया कि सबने अपने बंदी वापस कर दिए हैं एनिया को छोड़ कर, तो आप स. ने फ़रमाया- अल्लाह उसे घाटे में रखे। उसके बंदी की घटना इस प्रकार है कि उसने एक युवती के बजाए एक वृद्ध महिला को बंदी के रूप में लिया था ताकि उसके बदले मुंह माँगी धन सम्पत्ति मिले, क्यूंकि उसकी संतान भी बड़ी संख्या में होगी। जब उस बूढ़ी महिला का बेटा एनिया के पास आया और सौ ऊंटों के बदले अपनी माँ को स्वतंत्र करने का प्रस्ताव दिया तो एनिया ने अधिक स्वार्थ के कारण उसको आज़ाद करने से इन्कार कर दिया। कुछ देर बाद जब एनिया स्वंय उस बेटे के पास गया और कहने लगा जितने ऊँट तुम दे रहे थे, क्या अब भी देते हो? तो उस लड़के ने कहा कि अब तो मैं पचास ऊँट दूंगा। इस तरह वह कुछ और मांगता, वह कहता कि अच्छा मैं यह भी नहीं देता। अन्ततः कम होते होते बात यहाँ तक पहुँची कि एनिया कहने लगा कि बुढ़िया मुफ़्त ही ले जाओ मेरे से। इस पर लड़का कहने लगा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने तो हर क़ैदी को आज़ाद करने के साथ लिबास भी दिया है और यह बुढ़िया तो इससे वंचित रह गई, अतएव तुम इसके लिए लिबास भी दो। अन्ततः एनिया को अपनी चादर देनी पड़ी और यूं वह लड़का इस बन्दी महिला को भी लेकर गया और साथ लिबास भी।

आंहुज़ूर ﷺ ने बनू हवाज़न से उनके सरदार मालिक बिन ओफ़ के विषय में पूछा को पता चला कि वह ताएॅफ़ में बनू सक़ीफ़ के पास है। आप स. ने उसे सन्देश दिया कि यदि वह आप स. की आज्ञा स्वीकार करके वापस आ जाए तो उसके परिवार के लोग उसको वापस कर दिए जाएंगे। मालिक बिन औफ़ जब आप स. के सेवा में उपस्थित हुआ तो आप स. ने उसे उसके परिवार को भी लौटा दिया तथा

एक सौ ऊँट भी उपहार के रूप में उसको दिए। मालिक, आप ﷺ की उस उदारता को देख कर मुसलमान हो गया।

बनू हवाज़न के क़ैदियों में एक महिला शेमा नामक भी थीं जिनका असल नाम हज़ाफा था। जब वे गिरफ़्तार होकर आईं तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे नबी की रज़ाई बहिन (एक माँ का दूध पीने वाले बच्चे) हूँ जिस पर उन्हें आंहुज़ूर स. की सेवा में पेश किया गया। उन्होंने आंहुज़ूर ﷺ को अपने रज़ाई रिश्ते की निशानी के रूप में दांतों का निशान दिखाया और बताया कि यह आप स. मुझे उस समय काट लिया था जब आप स. मेरी गोद में थे, फिर बताया कि हम उस समय बकरियां चराते थे, और यह कि आप स. के रज़ाई माँ बाप मेरे वास्तविक माँ बाप हैं। आंहुज़ूर ﷺ यह सुन कर अपने स्थान पर खड़े हो गए और उनके लिए अपनी चादर बिछा दी, और फ़रमाया- इस पर बैठो। आप स. की आँखों से आंसू बहने लगे, आप स. ने उनसे अपने रज़ाई माँ बाप के विषय में पूछा। उन्होंने बताया कि उनका निधन हो चुका है। आप स. ने उनके वहाँ रुकने अथवा वापस जाने की इच्छा उन पर ही छोड़ दी। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल करते हुए वापस जाने का निश्चय किया। आप स. ने उन्हें तीन गुलाम एवं एक सेविका प्रदान की, इसी प्रकार ऊँट भी दिए। अबू दाऊद की एक कमज़ोर रिवायत के अनुसार जअराना नामक स्थान पर आंहुज़ूर ﷺ की रज़ाई माँ भी आप स. से मिलने के लिए आईं थीं किन्तु इसका बात का प्रमाण कमज़ोर है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि सम्भव है, रज़ाई माँ से भेंट की घटना किसी अन्य अवसर पर हो अथवा कथनाकार को गलती लगी हो, क्यूंकि रिवायत के अनुसार आंहुज़ूर ﷺ की रज़ाई माँ का निधन हुनैन के युद्ध से पहले हो चुका था।

आंहुज़ूर ﷺ ने जब मक्का से मदीने हिजरत फ़रमाई थी तो सौ ऊंटों के इनाम के लालच में सुराक़ा बिन मालिक आप स. का पीछा किया था और आप स. ने उसे एक शरण पत्र लिख कर दिया था, यही सुराक़ा नामक व्यक्ति जअराना नामक स्थान पर अपने उस पत्र के साथ उपस्थित हुआ और इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

इसी घटना क्रम में आप स. एक रात उमरे की नीयत से मक्का तशरीफ़ ले गए और रात में ही वापस आ गए। लोगों ने यही समझा कि जैसे आप स. कहीं गए ही नहीं। ज़ुलक़अदा के बारह दिन अभी शेष थे कि आँहज़रत ﷺ ने वापसी की यात्रा शुरू कर दी और नौ दिनों की यात्रा के बाद मदीना वापस पहुँच गए। हुज़ूरे अनवर ने यूरोप के विद्वानों की कुछ व्यर्थ टिप्पणियाँ तथा उनके संक्षिप्त उत्तर पेश करते हुए फ़रमाया कि यह सब कुछ पहले भी बयान हो चुका है।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों का सदवर्णन और जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई-

मुकर्रम डा. लईक़ अहमद फ़र्रख़ साहब आफ़ कनेडा, मरहूम ने काफ़ी साल वाकिफ़े ज़िन्दगी डाक्टर के रूप में अफ़्रीक़ा में सेवा की। भावात्मक वक्फ़ की आत्मा के साथ उन्होंने सेवाएं कीं। मरहूम सरल स्वभाव, दुआएं करने वाले, विनम्र एवं धैर्य तथा सुदृढ़ता का नमूना थे। सम्पूर्ण जीवन मानव सेवा में व्यतीत किया। जटिल परिस्थितियों में बड़े साहस के साथ काम करते रहे। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि मैं भी

घाना में रहा हूँ, मैंने भी इनके साथ समय व्यतीत किया है, अत्यन्त दिव्यात्मा, विनीत एवं सेवा करने वाले इंसान थे। वाक़फ़ीन का अत्यधिक आदर करने वाले थे। मेहमान नवाज़ी इनमें कूट कूट कर भरी हुई थी, दोनों पति पत्नी मेहमान नवाज़ हैं, अनेक ऐसी विशेषताएं थीं जो कम ही लोगों में होती हैं।

दूसरा सदवर्णन मुकर्रम हमीद अहमद गौरी साहब, हैद्राबाद भारत का था, मरहूम मूसी थे। परिजनों में पत्नी एक बेटी और चार बेटे, पोते पोतियाँ शामिल हैं। सब बच्चे किसी न किसी रंग में जमाअत की सेवा करने का सुअवसर पा रहे हैं। मरहूम मुहम्मद इनाम गौरी साहब, नाज़िर आला क़ादियान के छोटे भाई थे। ये समद गौरी साहब मुबल्लिग़ सिलसिला और सदर जमाअत अल्बानिया के पिता थे। सौम व सलात के पाबन्द, तहज्जुद पढ़ने वाले, क़ुरआन मजीद से प्यार करने वाले थे। मरहूम को हज एवं उमरा करने की तौफ़ीक़ भी मिली। ख़िलाफ़त का आज्ञा पालन करने वाले नेक एवं दिव्य पुरुष बज़ूर्ग थे। धन के बलिदान में अग्रणी रहते, होम्योपैथी की दवाएं भी निर्धनों को मुफ़्त में बाँटते थे। मर्कज़ी प्रतिनिधियों और मुरब्बियों का बड़ा सम्मान करने वाले थे।

ख़िलाफ़त के आदेशों का पालन करने वाले थे और हर छोटे से छोटा आदेश अथवा बड़े से बड़ा निर्देश होता तो इनका यह प्रयास होता कि पहले स्वंय अमल करूंगा, फिर जमाअत को बताऊंगा, और इस पर यह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सफल भी होते थे। होमोपैथी का इलाज भी किया करते थे, घर में ही दवा का भण्डार रखा हुआ था, जो रोगियों को बिना पैसे लिए ही देते थे। माली क़ुरबानी में पेश पेश रहते। अत्यधिक उदार एवं बार बार अपने रिश्तेदारों को घर पर बुलाते एवं उनके सुख दुःख में शामिल रहते थे।

नायब अमीर हैद्राबाद और सेकरेटरी तालीमुल क़ुरआन, अपने हल्क़े के सदर जमाअत भी रहे, नाज़िम अन्सारुल्लाह भी रहे, नायब सदर मजलिस अन्सारुल्लाह दक्षिण भारत के रूप में भी सेवा का अवसर मिला। अतएव काफ़ी इनकी जमाअती सेवाएं भी हैं, यहाँ भी जलसे में शामिल हो चुके हैं एक बार। अल्लाह तआला इनसे मगफ़िरत एवं रहम का सलूक फ़रमाए। इनके बेटे जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे जो मुबल्लिग़ सिलसिला हैं अल्बानिया में, अल्लाह तआला इन्हें भी धैर्य एवं साहस प्रदान करे, अतएव इनके जनाज़े की नमाज़ मैं बाद में पढ़ाऊंगा। हुज़ूरे अनवर ने मृतकों के लिए मगफ़िरत एवं दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब